जैन सिद्धान्त ग्रन्थमाला पुष्प २

अपभ्रंश महाकवि रइधू विरचित

श्री दशलाक्षणिक धर्म जयमाला

SHRI DASLAHSANIH DHARMA JAIMALA

(THE GARLAND OF VICTORY RE. TEN FOLD DHARMA)

By

SHRI RAIDHU,

The great poet of Apabhransha of 16th century V E.

Eng Tr by

Late DR KAMTA PRASAD JAIN, D L., Ph D.

हिन्दी पद्यानुवाद -

श्रीमती सरोजनी देवी जैन, कायमगंज

वीराब्द २४९०



सन् १९६४ ई०

प्रकाशक —

श्री अखिल विश्व जैन मिशन

अलीगंज (एटा) उ० प्र०

प्रथम आ० 1000

मूल्य ७५ न पै

Published by

The World Jain Mission, Aliganj (Etah) India

PREFACE

The Famous and Great Poet of Apabhransha, the mother of Hindi, is Shri Raidhu, who flourished in the 16th century of Vikram Era He was the desciple of Acharya Yashakirti and the grand desciple of Acharya Gunakirti of Mathura Sangh and Puskar Gachcha The seat of these Acharyas was in Gopachal or Gwalior Shri Raidhu also took the vows of a Jain monk and then he was named Singhasena

The available works of Sri Raidhu are the following 'Sripal Charitra', Pradyumna Charitra', 'Vrata Sara', Karana Guna Sodasi' 'Dasalakshana Jaimala,'Ratnatrayi', 'Megheswar Charitra', (Adipurana), Shada Dharmopadesha Ratana mala' 'Bhavisyadatta Charitra' and 'Karkand Charitra

'Daslakshana Jaimala' or 'Daslakshanik Dharma Jaimala' is the popular condensed work which is read by Jains on Paryushana Parva, the ten days Relgions Festival which generally falls in August Sept every year Every day of this festival is reserved for a particular Dharma, so every chapter of this work deals with that very aspect of the Real Religion

My reverend father, Dr K P Jain, alas, who is now no more translated it into English My elder sister Sm Sarojinidevi translated it into Hindi verse My sincere gratitudes are expressed for their pains in translating this nice work.

My rev father wanted its publication on the occasion of Paryushan Parva this year, so instead of many obstacles it is published in time It is a great satisfaction to me

Hope, wise readers will find it helpful in their spiritual elevation *—Virendra*

ALA

प्राक्कथन

विक्रम १९वीं शताब्दी ...
का संक्षिप्त किन्तु ...
का प्रकाशन यद्यपि पहले ...
बाद व अँग्रेजी अनुवाद ...
हो रहा है। जीवनोत्थान ...
विशेष योग रहेगा। परम ...
धर्मों से सम्बन्धित होना है ...
महत्व स्वयं प्रमाणित है। ...
बनाने के लिये इसे हिन्दी ...
साथ प्रकाशित किया जा ...
कामता प्रसाद जी की थी ...
पिता जी ने अपनी बीमारी ...
तत्वार्थानुशासन' का स्वाध्याय ...
अंश रह गया जिसे मैंने पूरा ...
मेरी अग्रजा श्रीमती सरोज ...
नुरूप अत्यधिक श्रम करके ...
होने के नाते क्या कृतज्ञता ...
मानने की बात तो है ही।

ता

ता।

... यत हों।

... पित हों।

...farer of
... face the
... never for
... e forgi-
... o heaven

पू० पिता जी की ...

पर

ती हुई यह कृति प्रकाश भी पा रही है लेकिन दुर्दैव से इसके प्रकाशका प्रेरणास्रोत अपनी आंखोंसे इसे साकार नहीं देख सका यह लिखते हुए मैं मर्मान्तक पीड़ाकी अनुभूति कर रहा हूँ। धर्मी का धर्मभाव जैसा कुछ हो सका है आज साकार हो रहा है—अब मेरे लिये यही बहुत है।

कवि रइधू अपभ्रंश के महान कवि है। इनकी अनेक रचनायें उपलब्ध हैं। जैसे 'श्रीपाल चरित्र, 'प्रद्युम्न चरित्र, 'व्रतसार', 'कारण गुणषोडसी', दशलाक्षण जय माला, 'रत्नत्रयी', 'मेघेश्वर चरित्र' (आदिपुराण) 'षड्रत्नोपदेशरत्नमाला' 'भविष्यदत्त चरित्र' करकण्ड चारित्र'।

जैनवाङ्मय के महान सेवक स्व० श्री नाथूराम जी प्रेमी के अनुसार रइधू " मथुरा संघ पुष्कर गच्छ के आचार्य यश कीर्ति के शिष्य और गुणकीर्ति के प्रशिष्य थे इन आचार्यों की गद्दी गोपाचल या ग्वालियर में थी। जान पड़ता है कि उक्त कविवर ने पीछे जिनदीक्षा लेली थी। और तब उनका नाम सिंहसेन रखा गया था।'

जितना सुन्दर प्रकाशन हम इस रचना का करना चाहते थे उतना परिस्थिति वश व समयाभाव के कारण नहीं कर सके। आशा है कि द्वितीय आवृत्ति में परिवर्द्धन किया जा सकेगा।

विनीत —

अलीगढ़ २१।८।६४] वीरेन्द्र

OM

SHRI DASLAHSANI DHARMA JAIMALA

(THE GARLAND OF VICTORY RE TEN FOLD DHARMAS)

श्री दशलाक्षणिक धर्म जयमाला

(१)

उत्तम क्षमाधर्माङ्गम् ।

(THE DHARMA OF RIGHT FORGIVENESS)

(१)

येन केनापि दुष्टेन पीडितेनापि कुत्रचित
क्षमा त्याज्या न भव्येन स्वग मोक्षमिलाषिणा ।

जिस किसी दुष्ट के द्वारा भी, जो पीडित कहीं कदाचित हों।
फिर भी न क्षमा त्यागें सु भव्य, जो स्वर्ग मोक्ष अभिलाषित हों।

Whenever a fortunate spiritual wayfarer of Nirvāna, called Bhavya, happens to face the onslaughts of a mischivious man, he never for gets and forsakes his *Ksama dharma*, i e forgiveness, because he is anxious to attain to heaven and Nirvana

(२)

उत्तमखम मद्दव अज्जव सच्चउ
पुण सउच्चसजम सुतओ
चाउ वि आकिंचणु भवभय
वचणु बमचरु धम्मजु अखओ ॥

ये उत्तम क्षमा सु मार्दव औ, आर्जव सत-शुचि सयम तपवर ॥
शुभ त्यागाकिंचन भव भय भजन,ब्रह्मचर्य दशधर्म सु चिर॥

Forgiveness, humility, simplicity, truth clean liness, self control, penance sacrifice(i e charity), nonpossessiveness and celibacy, when saturated whith Right Faith form the real and eternal characteristics of the Dharma

(३)

उत्तम खम तिल्लोयह सारी, उत्तम खम जम्मोदहितारी,
उत्तमखम रयणत्तय धारी, उत्तमखम दुग्गइ दुहहारी।

त्रयलोक सार उत्तम क्षम है भव जलधितारं उत्तम क्षम है।
त्रय रत्न धार उत्तम क्षम है, दुरगति निवारे उत्तम क्षम है।

The essence of the three worlds, indeed in the true feeling of *Ksáma* (forgiveness) (of a Right Believer) It is *Ksama* which carries one out of the ocean of birth and deaths The best Three Jewels (of Right faith, Right Knowledge and Right Conduct) reside only in right *Ksama* (forgiveness) And (it is the bl ssed) right *Ksama* which destroys the miseries of heinous worldly conditions

उत्तमखम गुणगण सहयारी उत्तमखम मुणिविंद पियारी ।
उत्तमखम बुहयण चिंतामणि, उत्तम स पउजइ थिरमणि ॥

गुण सहचारी उत्तम छम है, मुनि गण प्यारी उत्तम छम है ।
बुध चिन्तामणि उत्तम छम है, थिर मन उपजत उत्तम छम है ।

The Right Forgiveness caus*s to shine many other merits (in man) It is very dear to saints and sage* For the wisemen it works like *chin tamani* (wish fulfilling charm) Such a (blessed) u *tama-ksama* (Right Forgiveness) could be attained by controlling and contralizing the activities of mind.

(४६)

उत्तमखम महणिज सयल जणि,
उत्तमखम मिच्छत्ततमोमणि ।
जहिं असमत्थह दोस खमिज्जइ,
जहि असमत्थहणउ रुसिज्जइ ॥
जहिं आक्रोसण सहिज्जइ,
जहि परदोस णजणि भासिज्जइ ।
जहि चेयणगुण चित्तधरिज्जइ,
तहिं उत्तमखम जिण भासिज्जइ ॥

जग से पूजित उत्तम छम है मिथ्या तम मणि उत्तम छम है ।
असमर्थ दोष पर छमा नहीं, नहिं रोष रहत असमर्थ कहा ॥
आक्रोस वचन पर छमा जहाँ, पर दोष प्रगट किंचित न जहाँ
चेतन गुण धारी चित्त जहाँ कह उत्तम छम जिनराज वहाँ ॥

The Right Forgiveness is ever honoured in all the three worlds, it is the bright jewel which dispels the darkness of wrong belief

Where someone forgives the faults of a weakling, where anger is not shown toward the short coming of a wealking, where abusing words are borne with equanimity Where none declares the demerits of someone else, where the mind remains engaged in the pure consciousness of Soul,there and there only could be found *uttama ksamā* (Right Forgiveness), —so says Lord Jinendra

(७)

इय उत्तमखम जुय णरसुरखगणुय
केवलणाणु लहेवि थिरू ।
हुइ सिद्ध णिरंजण भवदुह भं जण
अगणिय रिसिपुंगमजि चिरू ॥

नमवे उत्तम क्षम युत को नर सुर खग फिर केवल ज्ञान लहे ।
हो सिद्धि निरंजन भवदुख भंजन ऋषि पुंगव, चिर सुखी रहे ॥

The mankind heavenly gods and the Vidya dharas bow to the observer of *uttama ksamā* He obtains *Kevaljnāna* (omniscience) and becomes a best sage He destroys the suffering of the world and attains the stainless status of a *Siddha* to enjoy its eternal bliss Hence one should always observe *Uttama Ksamā*, i e. Right Forgiveness

(२)

उत्तममार्दवधर्माङ्गम्

(THE RIGHT HUMILITY)

(१)

मृदुत्व सत्र भूतेषु काय जीवेन सर्व दा ।
काठि म त्यज्यते नि म धर्मबुद्धि विजानता ॥

जो धर्म बुद्धि के अधिकारी, वे नित प्रति हो जग जीवों पर ।
मृदुता के भाव धरें उर में, पा विजय कठिन परिणामों पर ॥

Those wayfarers who are aware of the Truth consciousness, called Dharmabuddhi always behave in humility towards all living beings and give up hard and rigid feelings (caused by Self conceit).

(२)

मद्दउ भवमद्दगु माणणिकंदणु दयधम्मह मूल जि विमलु ।
सव्वह हिययारउ गुणगणसारउ
ति सउ व ओ सजम सयलु ॥

मार्दव भव हारन, मान निवारन, दया मूल जिय विमल करे ।
य सबका हितकर स रभूत गुण, व्रत संयम को सफल करे ॥

The feeling of humility destroys the transmigrating condition of this world and it turns away totally the feeling of self-conceit *Mardava* I e humility is the root of compassion and is an eternal clean characteristic of soul It causes benefit to all living beings and is the best of the spiritual attributes All the vows and rules of selfcontrol become successful only by its observance

(२)

मद्दउ माणकसाय विहडणु,मद्दउ पचेंदियमण दडणु ।
मद्दउ धम्मे करुणावल्ली,पसरइ चित्तमहीहि णवल्ली ॥

मार्दव गुण मान कषाय हरे मार्दव इंद्रिय मन दमन करे ।
मार्दव से दया बेलि विस्तरै, भवि की चित पृथ्वी में प्रसरै ॥

It is the *Mardava* (humility) which destroys the passion of self conceit And it is, indeed, *Mardava* [humility] that controlys all the five senses and the mind And it is again the Dharma of *Mardava* which is instrumental in spreading the vine of compassion in the heart of the wayfarer, which is the ground [for the vine of compassion to grow]

(४)

मद्दउ जिणवरभत्ति पयासइ,मद्दउ कुमइपसरु णिण्णासइ ।
मद्दवेण बहुविणय पवट्टइ, मद्दवेण जणवइरो हट्टइ ॥

मार्दव जिन भक्ति प्रकाश करे, मार्दव कुबुद्धि ...
मार्दव बहु विनय विकाश करे, मार्दव जिय वैर ...

The devotion towards Lord ... (under the influence of the) ... It is due to *Mardava* (humility) that ... tentiones are crushed Again it is ... teaches (the way farer) to honour all ... of enemities are destroyed by observing ... (i e humility)

(५)

मद्दवेण परिणामविसुद्धी, मद्दवेण ...
मद्दवेण बोविहु च्छ सोहइ,
मद्दवेण ...

मार्दव से हैं भाव विशोधित, मार्दव से ...
दुइ विधि तप शोधित मार्दवसे, नर ...

It happens by observing ... that the feelings are cleaned and ... *dava* makes it possible for ... achieve the works of this and ... The inner kind of penance ... *Mardava* [humility] is ob erv ... way farer [who observes] ... enchant the peoples of all th...

(६)

मद्दउ जिण सासणजाणिज्जइ,
अप्पा पर ...

मद्दउ दोस असेस णिवारइ,

मद्दउ जम्मउ अहि उत्तारइ।

जिन शासन ही जाने मार्दव, है स्वपर रूप भावे मार्दव।
सब दोष निवारे ये मार्दव, जन्मोदधि से तारे मार्दव।

The Dharma of *Mardava* is known rightly in the Order of Lord Jinendra (Spiritual Conqurer) only. It is (by the grace of) *Mardava* that (the wayfarer' is able to discriminate between Soul and non-Soul), All the blemishes are cleaned by the observance of *Mardava*. And it is *Mardava* which enables man to cross the ocean of births and deaths.

(७)

सम्मद्दसण अगु, मद्दउ परिणामुजि मुणहु,
इय परियाणि वि चित्त मद्दउ धम्म अमल थुणहु ?

मार्दव है निज परिणाम सही सम्यग्दर्शन अंग यही।
इससे परिव्याप्त रहे चित ही, थुति करिये मार्दव की नित ही ॥

Remember that *Mardava* (humility) is (your) soul s characteristic and it is a part of Right Belief. Therefore keep it always in your mind and observe ever this *Mardava Dharma* with deep devotion.

उत्तम आर्जव धर्माङ्गम् ।

(*RIGHT SIMPLICITY*)

(१)

आर्जवं क्रियते सम्यादुष्टबुद्धिश्च त्यज्यते ।
पापचिंता न कर्तव्या श्रावकंधर्म चिंतकैः ॥

हे नृप चिन्तक ! श्रावक जन ओ !
परिणाम सरल रक्खो मन जो।
दुष्कृत चिन्तन कर्तव्य न हो,
दुरमति हर आर्जव प्रति चय हो

Oh, the wayfarer layman who keeps *Dharma* always in mind do endeavour to create soft feelings and give up the habit of hard and hot temper Never think even of sinful acts It is what is meant by *Arjava Dharma* (Simplicity)

(२)

धम्महु वरलक्खणु अज्जव थिर मणु
दुरियविहडणुसुहजणणु ।
तं इच्छ जि किज्जइ तं पालिज्जइ
तणि सुणिज्जइ खइजणणु ॥

—o—

आर्जव वर वृष लक्षण कहिये,अघ हर सुख कर थिर मन पइये।
इस प्राप्त हेतु तत्पर रहिये, सुनिये आचरिये अघ हरिये॥

The best characteristic of Dharma is *Arjava* The simplicity of mind, speech and body is *Arjava* It is observed well by concentrating the mind on it Its observance causes the destruction of Karmas Therefore hear its (discourse), ponder over it *and* (then) bring it into practice

(३)

जारिसु णियचित्तिहि चिंतिज्जइ
तारिसु अण्णहु पुणभासिज्जइ,
किज्जइ पुण तारिसु सुहस चणु,
त अज्जवगुण मुणहुअव चणु।

जिस विधि निज चित चितन करते,उस विधि उचरते आचरते।
इस विधि सुख सचित कर सकते, इसको अवच आर्जव कहते॥

What ever one thinks in his mind, he should accordingly then act in the same manner Thus simple behaviour (of the wayfarer is in accordance to) *Arjava* Dharma and he obtains joy and happiness

(४)

मायासल्लु मणहु णीसारहु,
अज्जवधम्मु पवित्तु वियारहु

वउ तउ मायावियहु णिरत्थउ,

अज्जउ सिवपुर पथहु सत्थउ ।

कर दूर शल्य माया भाई, उत्तम आर्जवधर सुखदाई ।
जप तप व्यर्थ करे कपटाई, आर्जव शिवपुर पथ सहाई ॥

O the wayfarer, just clean your heart by scratching out the arrow of deceitfulness and think over the Dharma of *Arjava* (Simplicity) All the observances of vow and penance of a deceit are meaningless Indeed, this *Arjava* is a right support on the way of salvation

जत्थाकुटिल,परिणाम चइज्जइ,

तहि अज्जवधम्म जु सपज्जइ

दसण णाण सरूय अखडउ,परम अतिदिय सुक्खकरडउ ।
अप्प अप्पहू भयहु तरडउ, ऐरिसु चेयणभाव पयडउ ॥
सो पुण अज्जउ धम्मइ लब्भइ,

अज्जवेण वयरिउ मन खुब्भइ ॥

जहँ कुटिल भाव विच्छिन्न करें, वहँ आर्जव वृष उत्पन्न करें।
निज दर्शन ज्ञान अखण्ड धरें,सु अतीन्द्रिय सुक्ख करण्ड भरें ॥
है भव तरण्ड नौका निज से, निज के पवित्र ही भावन से ।
ये भाव उपजते आर्जव से, हो जाय द्रवित वैरी जिस से ॥

Where the wicked feelings are cleaned there shines the *Dharma* of *Arjava* (simplicity) The merits of Right Faith and Knowledge and simple nature of soul are discerned in (the observance of *Arjava*), which is a treasure box of the best non sensual (i e spiritual) joy It is *arjava* which enables soul to cross (the ocean of) births and deaths and engenders brightest of the spiritual feelings in the heart The mind of an enemy shivers by (the practice of *arjava*.)

(७)

अज्जउ परमप्पउ गयसंकप्पउ
विम्मिरु जि सासउ अभओ ।
त णिउ झाइज्जइ ससउ हिज्जइ ।
पाविज्जइ जइ अचलपओ ॥

निश्चय असंग अविकल्प धर्म, शाश्वत परमातम आर्जव है ।
इसको ससय तज घ्याते हैं, सो अविचल पद को पाते हैं ॥

In reality the *Arjava* is but desireless, simple eternal and fearless concept of godhood. Therefore shed off all doubts and meditate on the great concept, so that you may attain to the everlasting status of *Moska*

(४)

उत्तम सत्यधर्माङ्गम् ।

(THE RIGHT TRUTH)

(१)

असत्यं सर्वथा त्याज्यं दुष्टवाक्यं च सर्वदा ।
परनिन्दा न कर्तव्या भव्येनापि च सर्वदा ॥

भो भवि ! उत्तम सत्य धर्म यथा यों झूठ वचन मत कहो कदा ।
पर निन्दा नहिं कर्तव्य, तथा, मन ! दुष्ट वचन परिहरो सदा ॥

The fortunate one should always give up the (bad habit) of speaking falsehood and wicked words He should not backbite against any one This is what is meant by Truth !

(२)

वयधम्मह कारण दोसणिवारण
इहभव परभव सुक्खयरू ।
सच्चु वि वयणुल्लउ भुवणि
अतुल्लउ बोलिज्जइ वीसासयरू ॥

दया धर्म का मूल सत्य ही, अघ हर औ दुहु भव सुखकर ही।
जगत श्रेष्ठ विश्वास वास हा, तुलना रहित कहो वच सत ही॥

The truth is the root cause (for observing) *Daya dharma*, i e compassion or mercy (By speaking) truth the all the demerits vanish and it awards (to the observer all the) joys of this and the next world the best of the spoken words are indeed, Turth it [redacted] incomparable & [redacted] an abode of reliance or faith Therefore always speak truth

(३)

सच्चु जि सव्वहु धम्मह पहाण,
सच्चुजि महियलिगरुओ विहाण।
सच्चु जि ससारसमुद्दसेउ,
सच्चु जि सव्वहु मण सुक्खहेउ।

सब धर्मों में प्रधान सत है, भू पर भारी विधान सत है।
भव जल को तरन सेतु सत है, सब जगके सुक्ख हेतु सत है॥

The greatest of the *Dharmas* is the truth and it is the weightest of all propensities The truth is the bridge to cross the ocean of *Samsara* (world) It is truth which causes happiness to all beings

(४)

सच्चेण जि सोहइ मणुवजम्मु,
सच्चेण पवित्तउ पुण्णकम्मु।

सच्चेणसयलगुण गण महंति,
सच्चेण तियस सेवा वहंति ॥
स चेण अणुव्वय महव्वयाइ,
सच्चेण विणासइ आवहयाइ ॥

ये मनुज जन्म शोभित सबसे, हो पुण्य कर्म मचित सत से।
है गुण समस्त पूजित सत से, सुर द्वारा वन्दित भवि सत से ॥
अणुव्रत महाव्रत पाले सत से, आपदा विनाशें सब सत से ॥

The human birth becomes beautiful by observing *Satya*, i e truth and all merit are collected through the truth All the rest merits shine in their better luster by truth The heavenly semi gods also Serve the observer of truth The minor and greater vows are observed more perfectly by practicing truth And it is truth which turns away all kinds of calamities (Therefore speak truth)

(५)

हियमिय भासिजइ णिच्चभास,
णवि भासिज्जइ परदुह पयास ॥
परबाहायर भासहु म सव्व,
सच्चु जि त छंडहु विपइगव्व ॥

भवि! तुम परमित हित वचन सभी, पर दुख कारक बोलो न कभी।
बोलो प्रिय! मत बाधा कर भी, सत बोलो छोड़ो मान सभी ॥

O the wayfarer! ever speak words beneficial words, do never speak words which may hurt

the hearer and cause him any trouble. Do give up such words of pride and conceit Herein is truth.

(६)

सच्चुजि परप्पउ अत्थि इक्कु,
सो मायहु मयतमबलणाअक्कु।
त विरअइ मणवयकाय गुत्ति,
जं णासि विट्टइ समार अत्ति ॥

है सत्य रवि भव तम दलन को, भज सत्य परमातम बनने को।
मन वच तन गुप्ति सु धरन को, है सत्य समर्थ दुख हरने को ॥

The Truth is but *Parmatma* (God), who like a sun destroys the darkness of *Samsara* [world] Ever contemplate on this Truth consists also in observing the three *guptis* [restraint] of mind, speech and body [By the observance of Truth] the miseries of the world vanish in time

(७)

सच्चु जि धम्मफलेण, केवलणाण लहेइ जगु।
त पालउ मा भव्व, मणाहु म अलिय उहइ वयणु ॥

हे भवि ! सत्य धर्म फल जानो "केवल ज्ञान लहे" सरधानो।
अत सदा सत वचन प्रमानो। मिथ्या वचन कभी न बखानो ॥

-- O gentle Souls ! you should try to grasp the results of Truth By truth, the omniscience is attained (The Right Cleanliness) Hence you should ever try to speak truth and should never tell a lie

(५)

उत्तम शौच धर्माङ्गम्।

(१)

बाह्याभ्यन्तरं चापि मनोवाक्कायशुद्धिभिः।
शुचित्वेन सदा भाव्यं पापभीतैः सुश्रावकैः॥

भय भीत पाप से श्रावक जना रख के पवित्र निज मन वच तन।
बाह्याभ्यन्तर शुचि कर चेतन। ये उत्तम शौच धर्म वर्णन॥

Those best among the housoholders, who are afraid of sin, should always keep clean their mind, speech and body Be the clean physically as well as spiritually

(२)

सउच जि धम्म गउ त जि
अभगउ भिण्ण पउ उवओगमओ।
जरमरण विणासणु तिजगपयासणु
झाइज्जइ अहणिस जि थुओ॥

शुचि धर्म अङ्ग उपयोग रूप,
तन से ये भिन्न अभग सरो।
जर मरण विनाशक त्रिजग प्रकाशक,
निश्चय अहनिश ध्यान धरो॥

The cleanliness is a limb of Dharma, which is simple and partless It is different from body, rather it is but the spiritual consciousness of soul (By observing right cleanliness the misery of birth) death and old age is destroyed All the three worlds shine [in the light of the Right] Cleanliness Therefore always day and night, contemplate [on the valve of the] Right Cleanliness.

(३)

धम्म सउच्च होइ मणसुद्धइ,
धम्म सउच्च वयणधण विद्धइ ।
धम्म सउच्च लोह वज्जंतउ
धम्म सउच्च सुतवपहि जं तउ ॥

मन की शुद्धी में वर शुचि है जिन वच वृद्धी में वर शुचि है ।
जो लोभ हने में वर शुचि है, शुभ तप तपने में वर शुचि है ॥

The *Dharma* of cleanliness is possible when mind is clean, it is to be find in growing the wealth of scriptural knowledge The right cleanliness could be observed only when one's heart is clean of greed. It could be seen in the observance of best pe ance

(४)

धम्म सउच्च बंभवयधारणु,
धम्म सउच्च मयट्ठणिवारण ।
धम्म सउच्च जिणायम भणणे,
धम्म सउच्च सुगुणअणुसरणे ॥

मन ब्रह्मचर्य में वर शुचि है, मद आठ हरन में वर शुचि है।
जिनमत प्रवचनमें वर शुचि है,सद्गुण ■ मननमें वर शुचि है॥

The right cleanliness is observed by practis ing celibacy When eight kinds of *mada* (intoxicating conceit of knowledge, wealth, family, caste, physical strength, *Riddhi* (superhuman psychic achievement), penance and beautiful body) is conquered then there appears right cleanliness The right cleanliness is (increased by contemplating best merits (of spiritual advancement)

(५)

धम्म सउच्च सल्लत्तयचाये,

धम्म सउच्च सुणिम्मलभावे।

धम्म सउच्च कसाय अहावे,

धम्म सउच्च ण लिप्पइ पावे।

ये हैं त्रय शल्य हनन वर शुचि,सम्यक सद्भाव सृजन वर शुचि।
ना है कषाय उन्मूलन शुचि, ये शामिल पाप पङ्क बिन शुचि॥

The right cleanliness is practised by giving up three) *salyas* i e arrows of deceit, falsehood and ambition) It is observed by (increasing) best spiritual feelings. The right cleanliness is to be found in the absence of all the *kasayas* (passions) and in being aloof and away from the dirt of sin

(६)

अहमाजिणवर पुज्ज विहाणे,

णिम्मल फासुय जल कयण्हाणे।

त पि सउच्च गिहत्थह भासिउ
णवि मुणिवरह कहिउ सोयासिउ ॥

अथवा जिन अर्चा विधान ये, निरमल प्रासुक जल नहान ये।
शुचि गृहस्थ का धर्म मान ये, नहिं ऋषि न्हवन करें प्रमान ये॥

To bath with filtered water in order to perform the worship of Jinendra could be cleanliness for an housholder, (otherwise bathing, whether in Ganges or Godavari, is useless) Bathing is is not necessary for ascetics

(७)

भउ मुणिवि अणन्तउ धम्म सउच्चउ
पालिज्जइ एयग्गमणि ।
सुहमग्गसहायउ सिवपयदायउ
अण्ण म चितह किंपि खणि ।

जग अथिर समझ मन थिर करिये।
शिव दायक वर शुचि आचरिये।
शुचि पथ सहाय मे सरदहिये
क्षण भी पर चिंतन—परिहरिये॥

Ever thinking that this world is transient one should practise right cleanliness The Dharma of right cleanliness, in fact, is a great support on the way of heaven or Nirvāna Therefore contemplate always (contemplate always) (the Value) of *Shaucha Dharma*

(६)

उत्तम संयमधर्माङ्गम् ।

(THE RIGHT SELF CONTROL)

(१)

संयमं द्विविधं लोके कथितं मुनिपुङ्गवं ।
पालनीयं पुनश्चित्ते भव्यजीवेन सर्वदा ।।

मुनि पुंगव गणधरादि उत्तम, संयम विधि कहते हैं सुगम ।
पालें सदैव भवि जीव संयम, करके अपने परिणाम प्रशम ।।

The great saints have described the *Dharma* of *Samyama* (self control) of two kinds (viz outer and inner) The fortunate wayfarers should contemplate and bring it into practice

(२)

संजमु जणि दुल्लहु जो त पाविल्लहु छडइ पुण मूढमई ।
सो भमइ भवावलि जरमरणावलि
कि पावे सो पुण सुगई ।।

दुर्लभ उत्तम संयम पाकर, महामूर्ख जो इसे त्याग कर ।
संयम बिन भ्रमण सहे नर, भला सुगति फिर पावे क्योंकर ।।

It is a rare chance that one is compitent to practice the Dharma of right self control And one (who has set himself) to observe, if (swerves from it) and stops practising it, is surely a great

fool Such a fool will have to roam about in worldly births and deaths He will never attain to be their worldly conditions

(३)

सजमु पचेंदियदहणेण । सजमु जि कसाय विहडणेण ॥
संजमु दुद्धरतवधारणेण सजमु रसचाइवियारणेण ॥

पचेन्द्रिय दमन स यम है, जु कषाय विहंडन स यम है ।
दुद्धर तप धारण स यम है रस त्याग विचारण स यम है ॥

The self control consists in controling five senses and four passions (of anger, conceit, deceit, greed) By observing severe penance one practises self control To give up the (habit of blindly) relishing the tastes, is but self control

(४)

सजमु उववासवियभणेण ।
सजमु मणपसरह थभणेण ॥
स जमु गुरुकायकिलेसणेण ।
स जमु परिगहगिह चायएण ॥

मत उपवास किये स यम है, मन को रोक दिये सयम है ।
काय क्लेश किये सयम है, परिग्रह त्याग किये सयम है ॥

The self control is practised by keeping fasts and by controlling the activities of mind By practising right bodily mortification, one observes self-control And self-control could be observed by giving up ambition for possessions.

स जमु तसथावररक्खणेण ।
स जमु तिग्निजोयनिग्गहेण ॥
स जमु सुत्तत्थ परिरक्खणेण,
स जमु बहु गमणविवज्जणेण ॥

त्रस थावर रक्षण सयम है, त्रय योग निग्रह सयम है ।
सूत्रार्थ परीक्षण सयम है बहु गमन निवारण सयम है ॥

The self control could be observed by protecting the mobile and immobile living beings and by controlling three *yogas* (of mind speech and body) By examining the contents and *meaning of the sutras(scriptures) the self control* is observed Avoid too much walking and one will observe s lf-control thereby

(६)

स जमु अणुकपकुणतणेण ।
स जमु परमत्थवियारणेण ॥
स जमु पोसइ दसणह पयु ।
स जमु णिच्छय णरमोक्खपय ॥

अनुकम्पा धारण सयम है, परमार्थ विचारण सयम है ।
सम्यक्त्व [illegible] पोषक सयम है, निश्चय शिव मारग सयम है ॥

The self-control engenders compassion for all living beings It consists in thinking the *sum mum bonum* of human life It is the self-control which supports the way of Liberation and in reality self-control is the true Way of *Moksa*

स'जमु विणु णरभव सयलु सुण्ण,
स जमु विणु दुग्गइ जिय उपण्ण ।
स जमु विणु घडिय म इत्य जाउ ।
स जमु विणु विहलिय अत्थि आउ ॥

यह नर भव व्यर्थ [illegible] सयम बिन, जिय दुर्गति पावे सयम बिन ।
इक घडी न जावे सयम बिन, यह आयु निरर्थक सयम बिन ॥

Without the observance of self control this human birth is meaningless (Therefore observe right self control) Without practising self con trol the wayfarer wanders about in bad worldly conditions of birth & death Therefore not a sin gle moment be wasted without observing self-control, because otherwise this human birth is of no value

(८)

इहभव परभव [illegible] जमु सरणु
हुज्जउ जिणणाहे भणिओ ।
दुग्गइसरसोसण खरकिरणोवम
जेण भवारि विसमु हणिओ ॥

सयम ऐसा जिननाथ कही, इह भव परभव में शरण सही ।
सयम रवि भव दुख घात कहै, दुर्गति सर शोषण हेतु यही ॥

The Lord Jinendra hath said right that it is *Sanyama* (self control) which is the only is protection in this and the next world

(७)

उत्तम तप धर्माङ्गम् ।

(THE RIGHT PENANCE)

(१)

द्वादश द्विविध चैव बाह्याभ्यन्तरभेदत ।
स्वय शक्तिप्रमाणेन क्रियते धर्मवेदिभिः ॥

उत्तम तप द्वादश विधि लखकर, भेद प्रमानो बाह्याभ्यन्तर।
भवि! धर्मज्ञ ! शुद्ध श्रद्धा कर, शक्ति प्रमाण तपो तप स्थिर ॥

The Right Penance is of two kinds (1) outer and (2) inner And these both are subdivided in six catagories each. The persons who are well versed in religious lore, observe them according to their capacity

(२)

णरभवपावेप्पिणु तच्च मुणेप्पिणु
खंचिवि पचेंदिय समणु ।
णिव्वेउ पम हिवि स गइ छंडिवि
तउ किज्जइ जाए वि वणु ॥

"ध्यान लगाओ" नर तन पाकर, पञ्चेन्द्रिय मन वशमें लाकर ।
परिग्रह तजि वन वास निभाकर उत्तम तप में ध्यान लगाकर ॥

If you have gained the human birth, (then the best thing for you) is to acquire true knowledge of the *Tat vas* and endeavour to control (the activiti s of the) five senses and mind After this much give up desire for possessions and retire to forest,so that you may perform the right penance !

(३)

त तउ जहि स गइ छडिज्जइ
त तउ जहि मयणु वि दडिज्जइ ॥
त तउ जहि णग्गत्तणु दीसइ ।
त तउ जहि गिरिकदरि णिवसइ ॥

उत्तम तप परिग्रहत्याग जहाँ, उत्तम तप काम विनाश जहां।
उत्तम तप नगन सु भेष जहा उत्तम तप गिरि आवास जहा ॥

The right penance consist in giving up all possessions and in conquering the sexual urge of cupid The right penance could also be practised by remaining nude and retering to hills caves.

(४)

त तउ जहि उपसग्ग सहिज्जइ ।
त तउ जहि रायाइ जिणिज्जइ ॥
त तउ जहि भिक्खइ भुजिज्जइ ।
सावयगेह काल णियमज्जइ ॥

उत्तम तप उपसर्ग सहन है, उत्तम तप रागादि हनन है।
उत्तम तप जहँ नियत समय में, श्रावक गृह शुचि अशन गहन है॥

While practising the right penance (the way farer bears all kinds of miseries and sufferings By observing penance the feelings of attachment etc vanish The right penance consists in taking meals as alms given by a Layman in his house at the right time

(५)

त तउ जत्थ समिदिपरिपालणु।
त तउ गुत्तित्तयह णिहालणु॥
त तउ जहि अप्पापरबुज्झइ।
त तउ जहि भय माणु जि उज्झइ॥

तप तहँ पंच समिति परिपालन, तप तहँ जहँ त्रय गुप्ति सु [illegible]।
तप तहँ निज पर भेद परीक्षण तप कारण मानादि [illegible]।

The right penance consists in the observance of *Samitis* and *Guptis* By discriminating between one's self and other outer substances one achieves *Tapa* (penance) *Tapa* is there where the causes of worldly transmigration are [illegible]

(६)

त तउ जहि ससरूव मुणिज्जइ।
त तउ जहि कम्म [illegible]
त तउ जहि सुरमणिजयाहइ।

निज रूप विकाश जहाँ तप है, विधि गण सब नाश जहाँ तप है।
करते सुर विनय तहाँ तप है भवि हित श्रुत अर्थ कहें तप है॥

The right penance could be observed by contemplating on one's true nature of soul and by destroying the karmas Before the right penance *Devas* appear in devotion, The penance consists in delivering religious discourses for the fortunate *Bhavyas*

(७)

जेण तवे केवलु जि उपज्जइ।
सासइ सुक्ख णिरुत्तु स पज्जइ॥

श्रेष्ठ कहा वह तपश्चरण यह, उपजे जिससे ज्ञान [illegible] निश्चल।
जिस तप द्वारा हटे कर्म मल, अविनाशी सुख पावें अविचल॥

The best right penance is that which causes omniscience & awards the everlasting happiness.

(८)

बारहविहु तउवरु दुग्गइपहहरु
तं पुज्जिज्जइ थिरमणेण।
मच्छरमऽछंडिवि करणइ दंडिवि
तं पि धरिज्जइ गउरवेण॥

द्वादश विधि ये दुर्गति पथ हर, उत्तम तप अर्चो कर मन थिर।
इन्द्रिय वश कर मत्सर मद हर, गौरवयुत धारो भवि! तप वर॥

The twelve kinds of right penance [illegible] the destroyer of the way to bad worldly condition Concentrate your mind and then observe it, because it will destroy yor transmigrating condition Give up deceit and consist and control the senses Than practise right penance with glory

उत्तम त्यागधर्माङ्गम् ।

(THE RIGHT SACRIFICE OR CHARITY)

(१)

चतुर्विधाय संघाय दानं चैव चतुर्विधम् ।
दातव्यं सर्वदा सद्भिश्चिन्तकैः पारलौकिकम् ॥

दान चार समुचित सज्जन ये, देना चार संघ अविचल के।
सदा दान ये शोभित उनके, परभव का चितन जिन के॥

The right charity is of four kinds (i e Food medicine, refuge and Knowledge) which should be given to fourfold Sangha (of asectics, nuns, layman and lay women) by the noble persons who are awakened towards the good for next world

(२)

चाउ वि धम्म गउ त जि अभगउ
णियसत्तिए भत्तिए जणहु ।
पत्तहं सुपवित्तहं तवगुणजुत्तहं
परगइसंबलु त मुणहु ॥

' त्याग अंग शुभ पूर्ण रीति से, शक्ति अनुसार भक्ति युत चित से ।
पात्र सुपात्र सहित गुण तप से, दो "परगति पाथेय " समझ से ॥

The right charity is a limb of Dharma, which one should observe according to one's means It should be given to the deserving persons, who may be engaged in penance and merits Indeed charity will work as refreshment for the next world

(३)

चाए आवागमणु उहट्टइ। चाए णिम्मलकित्ति पवट्टइ।
चाए अरियण पयविड्ढ पाए। चाए भोगभूमिसुह जाए॥

त्याग से आवागमन मिट जाता त्याग से प्रसरे कीर्ति समुज्ज्वल।
त्याग से नत हो जाते अरि गण त्याग दान से लहे भोग फल॥

The right charity causes the destuction of births and deaths It is the source to spread one's praise all around By practising charity even the enemies fall on one's feet and one gets pleasurs of Bhogabhumi

(४)

चाए विहिज्जइ णिच्च जि विणय।
सुहवयणइ भासेप्पिणु पणय।
अभय दाणु दिज्जइ पहिलारउ।
जिम णासइ परभवदुहयारउ॥

दान करो नित विनय प्रगट कर, नेह सहित शुभ वचन कहो फिर।
श्रेष्ठ प्रधान दान सु 'अभय' वर 'अभयदान' ही है भव-दुख हर॥

The charity should be given politely speak words and show love First of all give the charity of refuge so that you may destroy the miseries of the next world

(५)

सत्थदान बीजउ पुण किज्जइ ।
णिम्मलणाण जेण पाविज्जइ ।।
ओसह दिज्जइ रोयविणासणु ।
कहविण पिच्छइ वाहिपयासणु ।।

दीजै 'शास्त्रदान' सु द्वितीय पुन 'शास्त्रदान' सद् बुद्धि प्रकाशन ।
औषधि दीजे रोग विनाशन,'औषधिदान' सु व्याधि हन ।

Next of the charity is of knowledge by which one can acquire clear praise Thirdly give the charity of medicine so that all kinds of ailments may be removed

(६)

आहारे धणरिद्धि पवट्टइ ।
चउविह चाउ जि एहु पवट्टइ ।।
अहवा दुट्ठवियप्पह चाए ।
चाउ जि एहु मुणहु समवाए

है 'आहार दान' सु अधिकर दान चतुर्विधि दो समृद्धि नर।
अथवा दुष्ट विकल्प बुद्धि हर, 'निश्चय त्याग सु साम्यदृष्टि धर॥

The gift of food causes (increase) of riches and wealth Thus one should practise all the four kinds of charity In reality the giving up of wicked intentions is right sacrifice observe it with equanimity

(2)

दुहियह दिज्जइ दाणु, किज्जइ माणु जि गुणियणहं।
दय भावियइ अभग, दंसणु चिंतिज्जइ मणहं॥

दान सदा दो दुखी दलित नर।, गुणी पुरुष प्रति श्रद्धा कर।
सब प्रान पि मवन निरन्तर, रहे सदा ही अटल दया थिर॥

Give charity to the miserables and honour the wise Have compassion on all living beings, and always contemplate on the Right Faith



(९)

उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गम् ।

(*RIGHT NON POSSESSIVENESS*)

(१)

चतुर्विंशतिसंख्यातो य परिग्रहभेदत ।
तस्य संख्या प्रकर्त्तव्या तृष्णारहितचेतसा ॥

चौबिस भेद परिग्रह परिहर, भेद कहे द्वय बाह्याभ्यन्तर ।
अपने चित्त से तृष्णा तज कर,'परिग्रह नियम'बनाओ हितकर ॥

The possessiveness is of twentyfour kinds, which should be given up having conqured the greed in mind

(२)

आकिंचणु भावहु अप्पहु झायहु देहहु भिण्णउ णाणमओ ।
णिरुवमगयवण्णउ सुहसंपण्णउ परमअतिंदिय विगयभओ ॥

ज्ञान मई तन भिन्न सु चिन्तन आत्म ध्यान ध्याओ आकिंचन ।
निरभय निरुपम वर्ण न गंध न,परम अतीन्द्रिय सुखमय चेतन ।

To contemplate on (the pure nature of) Soul is right *akinchanya* so always contemplate it as separate and distinct from body,full of know ledge incomparable, devoid of colour, smell etc. full of happiness, unknowable by senses and beyond the reach of fear etc ।

आकिंचणु वउ संगह णिवित्ति।
आकिंचणु वउ सुहझाणसत्ति॥
आकिंचणुवउ वियलियममति।
आकिंचणु रयणत्तयपवित्ति॥

परिग्रह निरवति व्रत आकिंचन, शुभ ध्यान शक्ति मत आकिंचन।
है ममत त्याग व्रत आकिंचन रत्नत्रय धारण आकिंचन॥

The *akinchina* is observed by giving up all kinds of possessions When the self acquires the power to (concentrate itself into) meditation then is there *akinchana* To give up the feeling of attachment is *akinchana* and to observe (the rules of the) *Ratnatraya* (D h a r m a) is *akinchana*

(२)

आकिंचणु आउंचियइ चित्त।
पसरंतउ इंदियवणु विचित्तु॥
आकिंचणु देहह णेह चत्तु।
आकिंचणु ज भवसुहविरत्तु॥

इन्द्रिय वन विचित्र में ये मन, प्रसरण सकोचे आकिंचन।
देह नेह परित्याग अकिंचन, भव सुख विरक्तता आकिंचन॥

To stop the mind from warning into the wonderful forest of senses is *akinchana* To give

up love of body is also *akinchana* And the *Akinchanā* is in renouncing the worldly pleasures.

(४)

तिणमत्तपरिग्गहु जत्थ णत्थि ।
आकिंचणु सो णियमेण अत्थि ॥
अप्पापर जत्थ वियारसत्ति ।
पयडिज्जइ जहि परमेट्ठिभत्ति ॥

तृण मात्र परिग्रह नहीं जहाँ, नियमित आकिंचन प्रगट वहां।
है स्व पर विवेक विचार जहां परमेष्ठी भक्ति प्रकाश जहां ॥

Where there is not the best possession even of a straw, there is the Dharma of *Akinchana* Where one is engaged in discriminating between Soul and non soul (matter etc) and is devoted in worshipping the five Great Ones, there is the Dharma *Akinchana*

(५)

छंडिज्जइ जहि संकप्प दुट्ठ ।
भोयणु वछिज्जइ जहि अणिट्ठ ॥
आकिंचणु धम्मु जि एम होइ ।
तं झाइज्जइ णिरु इत्थ लोइ ॥

भवि जीव ! दुष्ट संकल्प हरैं, नीरस भोजन का चाह करैं ।
तत आकिंचन इस भांति धरैं यह जग जिम का निवस्थान धरैं ॥

Where bad intentions are done away with and where only unrelishable food is desired, there and there only is *A k i n c h a n a* Ever contemplate this(Dharma of non possessiveness) in this world

(७)

एयहु जि पहावें लद्धसहाये तित्थेसर सिवणयरि गया ।
गयकामवियारा पुण रिसिसारा अंकणिज्ज ते तेण सया ॥

आकिंचन धर्म प्रभाव महा, जो तीर्थंकर शिव नगर गया ।
गत काम विकार ऋषीगण या, अत के कारण नित पूज्य भया ॥

It is the glory of *Akinchana* that even Tirthankaras attain *Nirvana* by its help There are many other saints who have conqured cupid and became adorable(by the grace of *Akinchana*) So observe it always



desires or lusts do follow this great virtue of Brahmcharya (celibacy). The mind and heart which are captured by the elephant opposite sex's pleasures should be controled properly

(३)

चित्तभूमि मयणु जि उप्पज्जइ।
तेण जि पीडिउ करइ अकज्जइ॥
तियह सरीरइ णिंदिय सेवइ।
णियपरणारि ण मूढउ वेयइ॥

काम विषय की उपज भूमि चित्त, करै अकाज काम से पीड़ित।
निंदित जो नारी तन सेवत मूर्ख स्व पर स्त्री नहिं देखत॥

The cupid takes birth in the sphere of heart. A person, captured by is (cupid) does unethical and unlawful acts He enjoys the unholy body of ladies and then he does not even see as who is who means the lady which he enjoys is his own wife or not ?

(४)

णिवडइ णरइ महादुह भुंजइ।
सो हीणु जि बंभव्वउ भंजइ॥
इम जाणेप्पिणु मणवयकाये।
बंभचेरु पालहु अणुराये॥

इसम ब्रह्मचर्य व्रत तजकर, पावे जीव नरक सो दुखकर।
सा जान ॥ मन वच तन कर, ब्रह्मचर्य अनुराग सहित धर ॥

Those persons who don't observe celibacy (Brahmcharya) they fall in hell, and suffers imm*asurable miseries--knowing it, one should observe celibacy (Brahmcharya) by thought, speech and body

(५)

तेण सहु जि लब्भइ भवपारउ ।
वम विणु वउ तउ वि असारउ ॥
बंभव्वय विणु कायकिलेसो ।
विहल सयल भासयइ जिणेसो ॥

ब्रह्मचर्य सब जिय भव तारन, व्रत तप व्यर्थ ॥ ब्रह्मचय बिन।
व्यर्थ क्लेश तन ब्रह्मचर्य बिन इस प्रकार से भाषे श्री जिन ॥

All of the souls cross the world's ocean by the boat of celibacy (Brahmcharya) Without celibacy all vows, penances are useless, and without it all austerities are meaningless--it is stated by Lord Jinendra

(६)

बाहिरफरसेंदियसुह रक्खहु ।
परम बम अब्भतर पिक्खहु ॥

एणं उवाएं लब्भइ सिवहरु ।
इम रइधू बहुमणइ विणइयरु ॥

स्पर्शन सुख बाह्य त्याग नित, ब्रह्म अभ्यन्तर ध्यावो नित प्रति ।
यही उपाय घनो अविशिवपति इम रइधू अति कहे विनय युत ॥

Safe guard your Soul from indulgences of external senses save your elf from them Find the supreme celibacy (Brahmcharya) in your own Self With the help of this Brahmcharya, the salvation is attained–thus again and again very humbly says poet Raidhu

(७)

जिणणाहं महिज्जइ मुणिगणमिज्जइ
दहलक्खणु पालयइ णिरु ।
भो खेमसीहसुय भव्वविणयजुय
होलुव मण इह करहु थिरु ॥

मुनिगण प्रणमित जिनवर भाषित दशलक्षण मय योग रखो नित
खेमसिंह सुत भव्य विनय युत, होलुव सम सुस्थिर करलो चित ।

Lord Jinendra states the glory of these dharmas and the great munis (monks) bow to them Hence, O gentle souls, you must observe them Pacify your wavering heart like Shri Holu, the the son of Khem Singh (a contemporary of poet Raidhu who flourished in 16th century of Vikram Era)

झाणठाण मल्लारउ किज्जइ,

मिच्छामयउ पवेस ण दिज्जइ।

सीलसलिलधारहिं सिंचिज्जइ,

एम पयत्तें वड्ढारिज्जइ।

घत्ता

कोहानल चुक्कउ, होउ गुरुक्कउ,

जाइ रिसि दिय सिट्ठुगई॥

जगताइ सुहकरु, धम्ममहातरु,

देइ फलाइ सुमिट्ठुमई॥

इस विधि जो धर्म करें निरन्तर वो हरते हैं भव दुख पिंजर।
वे रोग रहित हों अजर अमर आ' प्राप्त करें सुख अविनश्वर॥
मिले मोक्ष फल, पालो शुभ दश धारो धर्म अङ्ग बल समुचित।
'धर्म वृक्ष' की क्षमा भूमि शुभ,'मार्दव' पल्लव 'आर्जव' शाखा-सु॥
मूल शाख 'सत पत्र सु संयम',द्विविधि महा तप पुष्प सुवासित॥
'त्याग'दान शुभगंध प्रसारित भव्य भ्रमर अति ही चित प्रमुदित।
सुर नर खेचर पक्षी सम ते फल कल करते सुखफल लहते।
दीन अनाथ दीनों श्रम हरते 'आकिंचन' सु सौम्य तन धरते॥
'ब्रह्मचर्य' छाया शुभ शोभित, राग द्वेष गया जिसके आश्रित।
धर्मवृक्ष यह रखो सुरक्षित, जीव दया मय वचन सुभाषित॥
इस शुभ तरु तल,ध्यान थान कर, मिथ्यामत प्रवेश सब परिहर।
सींचो शील सलिल धारा धर, करो इसे इसविधि समृद्धि वर॥
गंभीर बनो हर क्रोध अनल, जिससे शांति श्रेष्ठ मिले निरमल।
दशधर्म महा तरु सुखो सबल,जग करें फलें नित मिष्ठ सुफल॥

Thus destroying karmic matter's bondage, those who put the cage of universe to an end, they attain everlasting bliss

One should observe these defferent religions by which the fruit of liberation is achieved Now the poet is giving simile of a tre to these ten religions Forgiveness is the earth or ground on which this great tree of ten religions is standing, Mardava (Humility) is its tender leaf, Arjava (Simplicity) is its branch Satya (Truth) & Sauch (Cleanliness) are its roots, Sanayam (Self control) is its green leaf or leaves, Tapa (Penance) is its flower, Tyaga (Sacrifice or charity) is its smell which is spreading far and wide The gentle souls of men women, celestial beings and so on are the beas, birds which twitter and eat fruits of joy A k i n c h n a (Non Possession) is its stem andBrahmcharya (c e l i b a c y) is its s o o t h i n g shadow where Rajhan a (white goose) take shelter This tree of ten religions should be protected, the kindness should be kept in words,& the place of meditation should be made under this tree The wrong belief should not enter it and this tree should be irrigated with the water of Sheel (chastity) With continuous efforts it should be brought up

Extinguish the fire of anger, be sober sothat

nice Gati (state of existence) may be acquired Imparting joy to whole universe this tree will give sweet fruits to the world

अवशिष्ट छंद

मैं पूज्य पद पङ्कज हृदयधर निकट भव्य श्री 'रइधू' कविवर।
दशलक्षण की जयमाला वर स्व पर हितार्थ रची शुभ मनिहर॥
पूज्य पिताजी* ने अपभ्रंश कृत, लिखकर अंग्रेजी में इसका।
भाषा हेतु प्रेरणा हमको भक्ति सहाय रची तब इसको॥
नभ नव चतु द्वय वर्धमान का, संवत् जिन रक्षाबन्धन का।
'हेतु' कम छंद इस बखान का भूल सुधारो' प्रण सज्जन का॥
संवर कारण' सु प्रयास धरें, मानादि कषाय विनाश करें।
जब तक शिव नगरी वास करें तब तक इसका अभ्यास धरें॥

* स्व० श्री कामता प्रसाद जी जैन



सम्पूर्णम्